कारतूस

अंग्रेज इस देश में व्यापारी का भेष धारण कर के आये थे। किसी को कोई शक न हो इसलिए वे शुरू-शुरू में व्यापार ही कर रहे थे, परन्तु उनका इरादा केवल व्यापार करने का नहीं था। व्यापार के लिए उन्होंने जिस ईस्ट-इंडिया कंपनी की स्थापना की थी, उस कंपनी ने धीरे-धीरे देश की रियासतों पर अपना अधिकार स्थापित करना शुरू कर दिया। उनके इरादों का जैसे ही देशवासियों को अंदाजा हुआ उन्होंने देश से अंग्रेजों को बाहर निकालने के प्रयास शुरू कर दिए।

प्रस्तुत पाठ में भी एक ऐसे ही अपनी जान पर खेल जाने वाले शूरवीर के कारनामों का वर्णन किया गया है। जिसका केवल एक ही लक्ष्य था -अंग्रेजों को देश से बाहर निकालना। कंपनी के हुक्म चलाने वालों की उसने नींद हराम कर राखी थी। वह इतना निडर था कि मुसीबत को खुद बुलावा देते हुए न सिर्फ कंपनी के अफसरों के बीच पहुँचा बल्कि उनके कर्नल पर ऐसा रौब दिखाया कि कर्नल के मुँह से भी उसकी तारीफ़ में ऐसे शब्द निकले जैसे किसी दुश्मन के लिए नहीं निकल सकते।

अंग्रेज इस देश में व्यापारी का भेष धारण कर के आये थे। किसी को कोई शक न हो इसलिए वे शुरू-शुरू में व्यापार ही कर रहे थे, परन्तु उनका इरादा केवल व्यापार करने का नहीं था। व्यापार के लिए उन्होंने जिस ईस्ट-इंडिया कंपनी की स्थापना की थी, उस कंपनी ने धीरे-धीरे देश की रियासतों पर अपना अधिकार स्थापित करना शुरू कर दिया। उनके इरादों का जैसे ही देशवासियों को अंदाजा हुआ उन्होंने देश से अंग्रेजों को बाहर निकालने के प्रयास शुरू कर दिए।

प्रस्तुत पाठ में भी एक ऐसे ही अपनी जान पर खेल जाने वाले शूरवीर के कारनामों का वर्णन किया गया है। जिसका केवल एक ही लक्ष्य था -अंग्रेजों को देश से बाहर निकालना। कंपनी के हुक्म चलाने वालों की उसने नींद हराम कर राखी थी। वह इतना निडर था कि मुसीबत को खुद बुलावा देते हुए न सिर्फ कंपनी के अफसरों के बीच पहुँचा बल्कि उनके कर्नल पर ऐसा रौब

दिखाया कि कर्नल के मुँह से भी उसकी तारीफ़ में ऐसे शब्द निकले जैसे किसी दुश्मन के लिए नहीं निकल सकते।

पाठ – पात्र – कर्नल, लेफ़्टीनेंट, सिपाही, सवार

अवधि – 5 मिनट

ज़माना – 1799

समय – रात्रि का

स्थान – गोरखपुर के जंगल में कर्नल कालिंज के खेमे का अंदरूनी हिस्सा।

(दो अंग्रेज बैठे बातें कर रहे हैं, कर्नल कालिंज और एक लेफ़्टीनेंट खेमे के बाहर हैं, चाँदनी छिटकी हुई है, अंदर लैंप जल रहा है।)

शब्दार्थ –

खेमा – डेरा या तम्बू

छिटकी – फैली हुई

व्याख्या – *प्रस्तुत पाठ में लेखक ने चार व्यक्तियों का वर्णन किया है, वे हैं– कर्नल, लेफ़्टीनेंट, सिपाही और सवार। यह सन 1799 गोरखपुर के जंगल में कर्नल कालिंज के खेमे का अंदरूनी हिस्से में रात्रि के समय की बात है। यहाँ इन सभी किरदारों की पांच मिनट की बातचीत का वर्णन किया गया है।*

(दृश्य शुरू होता है कर्नल कालिंज और एक लेफ़्टीनेंट के तम्बू के बाहर से, जहाँ दो अंग्रेज बैठ कर बात कर रहे हैं, रात का समय है और चाँद की रोशनी फैली हुई है और तम्बू के अंदर लैंप जल रहा है)

पाठ – कर्नल – जंगल की ज़िंदगी बड़ी खतरनाक होती है।

लेफ़्टीनेंट – हफ्तों हो गए यहाँ खेमा डाले हुए। सिपाही भी तंग आ गए हैं। ये वज़ीर अली आदमी है या भूत, हाथ ही नहीं लगता।

कर्नल – उसके अफ़साने सुनकर रॉबिनहुड के कारनामे याद आ जाते हैं। अंग्रेजों के खिलाफ़ उसके दिल में किस कदर नफ़रत है। कोई पाँच महीने हुकूमत की होगी। पर इस पाँच महीने में वो अवध के दरबार को अंग्रेजी असर से बिलकुल पाक कर देने में तक़रीबन कामयाब हो गया था।

शब्दार्थ –

हुकूमत – शासन

पाक – साफ़

तक़रीबन – लगभग
अफ़साने – कहानियाँ
(यहाँ कर्नल और लेफ्टिनेंट वज़ीर अली के बारे में बात कर रहे हैं)
व्याख्या – *कर्नल लेफ्टिनेंट से कह रहा है कि जंगल की जिंदगी अर्थात जंगल में रहना बहुत खतरनाक होता है। इस पर लेफ्टिनेंट भी कहता है कि उन लोगों को वहाँ जंगल में डेरा डाले हुए कई हफ्ते हो गए हैं। उनके सिपाही भी परेशान हो गए हैं। ये वजीर अली कोई आदमी है भी या कोई भूत है, जो हाथ ही नहीं लग रहा है। कर्नल आगे की बात कहता है कि इस वजीर अली की कहानियाँ सुन कर रॉबिनहुड के कारनामे याद आ जाते हैं। रॉबिनहुड की ही तरह वजीर अली के मन में भी अंग्रेजों के खिलाफ बहुत अधिक नफरत भरी पड़ी है। वजीर अली ने कोई पाँच महीने ही शासन किया होगा। परन्तु इन पाँच महीनों में ही उसने अवध के राज्य को अंग्रेजों के असर से लगभग बिलकुल साफ़ कर दिया था।*
पाठ – लेफ्टिनेंट – कर्नल कालिंज ये सआदत अली कौन है ?
कर्नल – आसिफ़उद्दौला का भाई है। वजीर अली और उसका दुश्मन। असल में नवाब आसिफ़उद्दौला के यहाँ लड़के की कोई उम्मीद नहीं थी। वज़ीर अली की पैदाइश को सआदत अली ने अपनी मौत ख्याल किया।
लेफ्टिनेंट – मगर सआदत अली को अवध के तख़्त पर बिठाने में क्या मसलेहत थी ?
कर्नल – सआदत अली हमारा दोस्त है और बहुत ऐश पसंद आदमी है इसलिए हमें अपनी आधी मुमलिकत (जायदाद, दौलत) दे दी और दस लाख रूपये नगद। अब वो भी मज़े करता है और हम भी।

शब्दार्थ –
उम्मीद – आशा / भरोसा
पैदाइश – जन्म
तख़्त – राजसिंहासन
मसलेहत – रहस्य
ऐश पसंद – भोग-विलास को पसंद करने वाला
(यहाँ पर कर्नल लेफ्टिनेंट को सआदत अली के बारे में बता रहा है)

श्रीसुदर्शन एम
अमृत ईश्वरन
XTH